Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, OCT- NOV 2017, VOL- 4/24

आधुनिक संचार साधनों के प्रति ग्रामीण महिलाओं का दृष्टिकोंण

Ranjana Gupta, Ph. D.

Associate Professor- Home Science, K. R. Girls P.G. College Mathura

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध समस्या व अवधारणा : प्रस्तुत अध्ययन दूरदर्शन से ग्रामीण समुदाय पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों के प्रति निदर्शितों के सोच/अभिमतों पर आधारित किया गया है एवं यह जानने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीणजन दूरदर्शन पर केवल मनोरंजन ही करते हैं या फिर दूरदर्शन से होने वाली हानियों/दुष्प्रभावों से अपने सोच में बदलाव भी ला रहे हैं अथवा नहीं। विशेषकर किशोर–किशोरियों पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पड़ता है; वे अपराधी प्रवृत्तियों में फंसकर नैतिक रूप से पतित हो, पतन पथ की ओर अग्रसर हो रहे हैं; व्यक्तितव विकास तथा चरित्र निर्माण में; दूरदर्शन पर दिखायी जाने वाली इस तरह की भूमिकाएं विशेष रूप से घातक हैं; बच्चों जो कि राष्ट्र की भावी निधियाँ हैं, बर्वादी के कगार पर जा रही हैं। अतः शासन को ऐसे रोल्स पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए ताकि राष्ट्र की भावी सन्तति स्वयं का एवं राष्ट्र का चरित्र निर्माण कर एक सबल व सम्पन्न राष्ट्रीय धरोहर बन सके। अनुसंधित्सु की दृष्टि में यदि दूरदर्शन पर प्रसारित किए जा रहे कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया जाय तो दूरदर्शन से पड़ने वाले प्रभाव सकारात्मक कम तथा पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव अधिक प्रभावी हैं। संचार और समाज का रिश्ता निकटतम है। बिना संचार के किसी समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। विज्ञान के चमत्कारों ने जहाँ एक ओर मनुष्य की जिज्ञासाओं के समाधान करने का कार्य किया है; वहीं मानव की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में दूरसंचार के साधन काफी विकसित रूप में सामने आये हैं।

अर्नाल्ड एन्डरसन सी,(1984:4) के शब्दों में कहें– ''तो संचार के साधनों ने मनुष्य की अन्तः दृष्टि तथा वाहि : दृष्टि का विस्तार किया है।''[1]

जिस तरह शरीर को स्वस्थ रहने के लिये संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है उसी तरह मनोरंजन भी शरीर के लिये टॉनिक का कार्य करता है। मनोरंजन की यह परम्परा प्राचीनकाल से ही शुरू हो गई थी। प्राचीन समय में मनोरंजन के लिये शिकार खेलना, घोड़ों को दौड़ाना, अस्त्र–शस्त्र चलाना, रथ चलाना आदि का उपयोग किया जाता था। लेकिन आधुनिक काल ने तो मनोरंजन के साधनों में एक नई क्रांति ला दी है। रेडियो, सिनेमा व दूरदर्शन व मोबाइल ने मानव को अपने आकर्षण में बांधा है।

शोध प्ररचना : शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन को सम्पादित करने के लिए विवरणात्मक शोध प्ररचना **(Exploratory Research Design)** को चुना है ताकि अध्ययन की प्रस्तुति सरल किन्तु तार्किक रूप में की जा सके।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

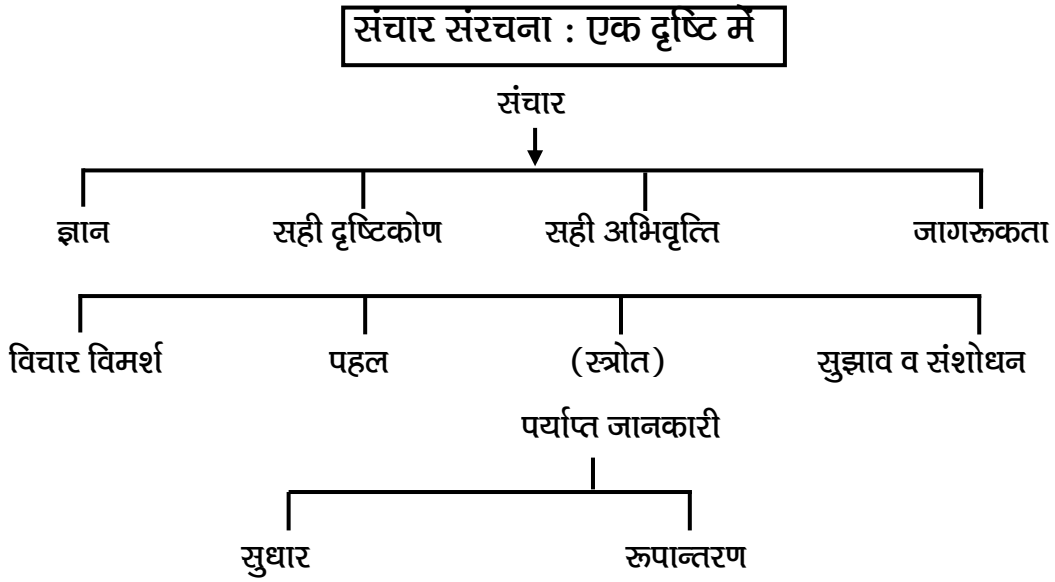

तालिका नं. (1) : ''क्या दूरदर्शन अधिक देखने से बच्चों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है?''

क्रमांक	*प्रश्न का प्रत्युत्तर (अभिमत)*	*आवृत्तियाँ*	*प्रतिशत*
1.	हाँ	90	30.00
2.	नहीं	90	30.00
3.	उदासीन	120	40.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित कुल 300 न्यादर्श सूचनादाताओं में से 90–90 (30–30 प्रतिशत) न्यादर्शों ने समान रूप से लाभ तथा हानि होना स्वीकार किया है जबकि 120(40 प्रतिशत) न्यादर्शों ने इस सम्बन्ध में उदासीन अभिमत/प्रत्युत्तर प्रदान किए हैं। कोई भी सूचनादाता अनुत्तरित नहीं पाया गया है।

तालिका नं. (2) : ''क्या दूरदर्शन अनैतिकता में वृद्धि कर रहा है?''न्यादर्शों के अभिमत/विचार

क्रमांक	न्यादर्शों के अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हाँ	210	70.00
2.	नहीं	30	10.00
3.	उदासीन	60	20.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता हैं कि सर्वेक्षित कुल 300 न्यादशों में से 210(70प्रतिशत) न्यादर्शो ने यह स्वीकार किया है कि दूरदर्शन से अनैतिकता बढ़ रही है। नकारात्मक सोच दर्शाने वाले मात्र 30(10 प्रतिशत) न्यादर्श ही पाए गए हैं 60(20 प्रतिशत) न्यादर्श ऐसे भी पाए गए है। जिन्होने इस प्रसंग में उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं। कोई भी न्यादर्श इस प्रश्न के उत्तरों पर

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनुत्तरित नहीं रहा है। इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निम्न निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है– ''दूरदर्शन, अनैतिक आचरणाों में वृद्धि कर रहा है।''?

तालिका नं. (3) : ''क्या दूरदर्शन से अपराधों में वृद्धि हो रही है?'' प्रश्न का प्रत्युत्तर न्यादर्शों के अनुसार

क्रमांक	प्रश्न का प्रत्युत्तर (अभिमत)	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हाँ	225	75.00
2.	नहीं	30	10.00
3.	उदासीन	45	15.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रसंगाधीन तालिका के प्राथमिक आँकडों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि सवेक्षित कुल 300 न्यादर्श सूचनादाताओं में से 225(75 प्रतिशत)न्यादर्शो ने यह स्वीकार किया है कि ग्रामीण समुदायों में दूरदर्शन से अपराधों में वृद्धि हो रही है, इसका सूचनादाताओं ने बताया कि ग्रामीण समुदाय के लोग अशिक्षित होते हैं अतः वे गलत चीजों को अधिक ग्रहण करते हैं, उन गन्दी भूमिकाओं से सबक नहीं लेते है। नकारात्मक प्रत्युत्तर प्रदान करने वाले 30(10 प्रतिशत)न्यादर्श पाए गए जिन्होने यह वताया हे कि दूरदर्शन से अपराधों में वृद्धि नहीं हो रही है, यों तो प्रत्येक चीज से हानि तथा लाभ दोनों ही हुआ करते हैं। जो कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि 45(15 प्रतिशत)न्यादर्श ऐसे भी पाए गए हैं जिन्होने इस प्रश्न पर उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं। इन आनुभविक तथ्यों के प्रकाश में सुस्पष्ट है कि– ''दूरदर्शन का प्रभाव पडने से अपराधों में वृद्धि हो रही है।'' साथ ही साथ अनैतिकता भी बढ़ी है।

तालिका नं. (4) : ''भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता तथा दूरदर्शन''के प्रति न्यादर्शों के विचार (अभिमत)

क्रमांक	सम्बन्धित विवरण	न्यादर्शों के विचार (संख्या/प्रतिशत)				
		हाँ	*नहीं*	*उदासीन*	*अनुत्तरित*	
1.	भारतीय संस्कृति दुष्प्रभावित हुई है।	300 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	(
2.	भारतीय सभ्यता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।	270 (90.00)	–– (00.00)	27 (09.00)	03 (01.00)	(

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से विदित होता हे कि– (1)शत प्रतिशत न्यादर्शो ने यह स्वीकार किया है कि दूरदर्शन के वढ़ते प्रचार प्रसार से भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति आक्रमण कर रही है जिससे भारतीय संस्कृति तेजी के साथ दुष्प्रभावित हो, नष्ट हो रही है (2) 2 प्रतिशत से (90 प्रतिशत)न्यादर्शो ने स्वीकार किया है कि भारतीय सभ्यता पर दूरदर्शन का प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, भले ही दूरदर्शन से सकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। मात्र 27(9 प्रतिशत) न्यादर्श ऐसे पाए गए है जिन्होने इस प्रश्न का उदासीन होकर उत्तर दिए है। तथा तीन (1 प्रतिशत) न्यादर्श अनुत्तरित भी रहे हैं। इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(1) ''दूरदर्शन से भारतीय संस्कृति दुष्प्रभावित हुई है।''

(2) ''दूरदर्शन का भारतीय सभ्यता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है''

तालिका नं. (5) : किशोरों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रतिन्यादर्शों के विचार (अभिमत)

क्रमांक	*दूरदर्शन से पड़ने वाले प्रभाव*	*यादर्शों के विचार (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)*		
		हाँ	*नहीं*	*उदासीन*
	योग			
1.	पढ़ाई लिखाई के प्रति उदासीनता आयी है।	279	––	21
		(93.00)	(00.00)	(07.00)
2.	सामान्य ज्ञान बढ़ा है।	300	––	––
		(100.00)	(00.00)	(00.00)
3.	खेलों (क्रिकेट) के प्रति रूझान बढ़ा है।	246	09	45
		(82.00)	(03.00)	(15.00)
4.	अपराधी प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं।	279	18	03
		(93.00)	(06.00)	(01.00)
5.	पारिवारिक अनुशासन शिथिल हुआ है।	243	09	48
		(81.00)	(03.00)	(16.00)
6.	किशोरों के व्यक्तित्व विघटित हुए हैं।	189	21	90
		(63.00)	(07.00)	(30.00)
7.	समझदारों के लिए व्यक्तित्व विकास	180	30	90
	में सहायक है।	(60.00)	(10.00)	(30.00)
8.	मनोरंजन करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।	198	15	87
		(66.00)	(05.00)	(29.00)
9.	किशोरों के जीवन पर बहुआयामी	267	––	33
	प्रभाव पड़ा है।	(89.00)	(00.00)	(11.00)
10.	नैतिक एवं चारित्रिक पतन की	240	12	48
	पराकाष्ठा हुई है।	(80.00)	(04.00)	(16.00)

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों क विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि कुल 300 न्यादर्श सूचनादाताओं में से–

(1) पढाई लिखाई के प्रति उदासीनता आयी है के प्रति 279(93 प्रतिशत) न्यादर्शो ने हाँ, तथा 21(7 प्रतिशत) न्यादर्शो ने उदासीन विचार प्रकट किये हैं।

(2) सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है, के सम्बन्ध में शत प्रतिशत सूचनादाता न्यादर्शो ने 'हाँ' कहकर स्वीकारोक्तियाँ की हैं, नकारात्मक तथा उदासीन उत्तर प्रदान करने वाला एक भी सूचनादाता नहीं पाया गया है।

(3) खेलों (विशेषकर क्रिकेट) के प्रति सूझान बढ़ा है, के सम्बन्ध में 246(82 प्रतिशत) न्यादर्शो ने हाँ, 9(3 प्रतिशत)ने नहीं, 45(15 प्रतिशत) ने उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं

(4) किशोरों में अपराधी प्रवृति बढ़ी है के सम्बन्ध में 279(93 प्रतिशत) न्यादर्शो ने ''हाँ'', 18(6 प्रतिशत) न्यादर्शो ने ''नहीं'' तथा मात्र 3(1 प्रतिशत)ने उदासीन विचार प्रकट किए हैं। निः सन्देह किशोर तथा युवा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(बालक–बालिकाओं) में अपराधों की ओर उन्मुखता हुई है वे आज दिग भ्रमित हैं, उनमें सह पलायनवादी प्रवृति पनपी है।

(5) पारिवारिक अनुशासन शिथिल हुआ है,के सम्बन्ध में, 243(81 प्रतिशत)न्यादर्शो ने हाँ, 9(3 प्रतिशत)न्यादर्शो ने नहीं तथा 48(16 प्रतिशत)न्यादर्शो ने उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं। निः सन्देह यह स्पष्ट है कि पारिवारिक अनुशासन शिथिल हुआ है, यहाँ तक कि किशोर–किशोरियों में स्वच्छन्दता पनपी है।

(6) किशोरों–किशोरियों के व्यक्तित्व विघटित हुए हैं, के सम्बन्ध में 189(63 प्रतिशत) न्यादर्शो ने हाँ , 21(7 प्रतिशत)ने न्यादर्शो ने नहीं, तथा 90(30 प्रतिशत) न्यादर्शो ने उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि युवक युवत्तियों में वैयक्ति विघ्टनों के कारण अलगाव वादी प्रवृत्ति प्रोत्साहित हुई।

(7) दूरदर्शन समझदारों के लिए व्यक्तित्व विकास में सहायक है, के सम्बन्ध में 180(60 प्रतिशत)न्यादर्शो ने हाँ, 30(10 प्रतिशत)न्यादर्शो ने नहीं तथा 90(30 प्रतिशत) न्यादर्शो ने इस प्रसंग में उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं। इन तथ्यों के प्रकाश में स्पष्ट है कि समझदार लोगों के लिए दूरदर्शन, व्यक्तित्व विकास में सहायक है।

(8) दूरदर्शन पर अधिक समय मनोंरंजन करने की प्रवृति बढ़ी है के सम्बन्ध में 178(66 प्रतिशत) न्यादर्शो ने सकारात्मक उत्तर प्रदान किए हैं तथा 87(29 प्रतिशत) न्यादर्शो ने उदासीन अभिमत दर्शाए हैं। इन आनुभविक तथ्यों के प्रकाश में सुस्पष्ट है कि जन संचार के साधनों में केवल दूरदर्शन पर अधिकाँश समय मनोरंजन करने के प्रति सूझान बढ़ा है।

(9) किशोरों के जीवन पर बहुआयामी (सामाजिक,आर्थिक, शैक्षिक राजनैतिक, बौद्धिक, ज्ञानार्जन, कलात्मक अपराधिक उन्मुखता आदि) प्रभाव पड़ने के सम्बन्ध में 267(89 प्रतिशत) न्यादर्शो का मानना है कि यह तथ्य सत्य है जबकि 33(11 प्रतिशत) न्यादर्शो ने इस सन्दर्भ में उदासीन प्रत्युत्तर अभिमत दर्शाए हैं। इन समस्त तथ्यों के आलोक में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दूरदर्शन से किशोर किशोरियों के जीवन पर बहु आयामी प्रभाव पड़ा है जिनमें कुछ प्रभाव रचनात्मक/सकारात्मक है तो कुछ नकारात्मक ।

(10) दूरदर्शन देखने से नैतिक एवं चारित्रिक पतन की परकाष्ठा हुई है के सम- बन्ध में 240(80 प्रतिशत) न्यादर्शो ने हाँ, (सकारात्मक) उत्तर प्रदान किए हैं तथा मात्र 12(4 प्रतिशत) न्यादर्शो ने नहीं (नकारात्मक उत्तर प्रदान किए हैं जब कि 45(16 प्रतिशत) न्यादर्श उदासीन/तटस्थ उत्तर प्रदान करने वाले पाए गए हैं। इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि– किशोर–किशोरियों एवं युवक–युवतियों द्वारा दूरदर्शन देखने से उन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के कारण नैतिक तथा चारित्रिक पतन तेजी के साथ हो रहे हैं, नई पीढ़ी को दुष्प्रभावित करने में दूरदर्शन पर कतिपय कार्यक्रम यथाः ''कहीं किसी राज'' हंसी सो फॅसी फैशन शो, अधः वस्त्र प्रतियोगिता ''क्या हादसा क्या कहीकत''

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तलाकक्यों'' क्यों होता है प्यार'' सी. आई. डी.'' आदि दिखाए जा रहे है जो शिक्षा प्रद कम, दुष्प्रभाव डालने वाले अधिक हैं।

संदर्भ :

अर्नाल्ड एन्डरसन सी, 1995 : दि मार्डनाइजेशन ऑफ एजूकेशन, दि न्यू एशिया पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क (सेन्टर बुक्स) वाल्यूम–2

आर्य एस.नपी., 1998 : ग्रामीण समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली

कथूलिया एस.के., 2003 : फ्रोम ट्रेडिशन टू मॉडर्निटी, अभिनव पब्लिकेसन्स, नई दिल्ली

करलिंगर, एफ.एम, 2003 : फाउन्डेशन ऑफ विहेवियरल रिसर्च रिनाहर्ट एण्ड विंसटन, न्यूयार्क

थॉमस पी.के., 2009 : आधुनिकीकरण तथा शिक्षाः एक परिदृश्य, पापुलर प्रकाशन, बाम्बे

दुबे एस.सी. 2010 : मॉडर्नाइजेशन एण्ड इट्स एडप्टिव डिमाण्डस ऑन इण्डियन सोसायटी, यूनेस्को प्रेस

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies